चन्द्रप्रकाश पटसारिया

दोहा चौपाई में जल गाथा

हे कृपालु जल देव तुम, जीवन के आधार।
जीव बनस्पति नर ऋणी, आपसे यह संसार।।1।।
तुमसे ही जल जीव सब, हे जीवन आगार।
लाभ हानि गुण आपके, लिखता यहां विचार।।।2।।

चौपाई- हिन्दी में जब तुम्हें बुलाते, तब अमृत, जल आप कहाते।
अम्बु, उदक, रस, आपके नाम, तोय, नीर, पानी, सुखधाम।
दो गैसों से निर्मित काया, यौगिक रूप आपने पाया।
ताप बढ़ाते या कि घटाते, चमत्कार तब तुम दिखलाते।
ठोस तरल जल वाष्प बनाते, तीन अवस्था आप दिखाते।
सूरज तुमको अधिक तपाता, तुम्हें तरल से भाप बनाता।
धरती से नभ में ले जाता, जग को पता नहीं चल पाता।
ऊपर जब तुम ठंडक पाते, तरल रूप फिर भू पर आते।
रिमझिम सावन झड़ी लगाते, जीव जन्तु सब राहत पाते।

दोहा- वाष्प रूप ले तरल जब, वाष्पीकरण कहाय।
क्रिया कहाती संघनन, भाप तरल ह्वै जाय।।3।।

चौपाई- पर्वत पर पौधे हरियाते, जब वर्षा बौछारें पाते।
वर्षा जल पौधे की जान, वर्षा से खिलते उद्यान।
वर्षा जल जब छत पर पायें, संग्रह करें न व्यर्थ बहायें।
वर्षा जल सब संग्रह करिये, स्वच्छ काँच पात्रों में भरिये।
डिस्टिल वाटर यह कहलाता, प्रायोगिक कामों में आता।
स्वाद रंग ना इसका कोई, शुद्धोदक वर्षा जल होई।
भू से जाना भू पर आना, इस प्रकार इक चक्र बनाना।

दोहा- भाप बना भू से उड़ा, फिर भू पर आ जाय
कहलाता 'जल चक्र' यह, वैज्ञानिक समझाय

चौपाई- त्रयी अवस्था ठोस दिखाते, बर्फ ग्लेशियर आप कहाते।
गले ग्लेशियर तरल बनायें, नदियाँ इस जल से भर जायें।
गला ग्लेशियर खबर ये आती, जनता तब सारी घबराती।
कुआं झील झरने सरितायें, स्त्रोत आपके ये कहलाते।
शुद्ध रूप भू गर्भ में रहते, पाते तुम्हें खनन जब करते।
सर सागर आवास तुम्हारे, लेकिन सागर में तुम खारे।
जल बिन सरितायें बेकार, सूख रही इनकी जलधार।
किया प्रदूषण रेत उठाई, जल में कचरा दिया मिलाई।
मानव हो गया अत्याचारी, नहि भविष्य की बात विचारी।
राम ने जल से तिलक लगाया, लंका राज्य विभीषण पाया।
संकल्प आचमन हित जल तत्व, जलदेव आपका बड़ा महत्व।

दोहा- जल की महिमा अमित है, सब करिये स्वीकार।
उस ग्रह पर जीवन नहीं, जहां नहीं जलधार।।5।।

दैनिक कार्यो में जल

घर की तुमसे होय सफाई, मँजते बर्तन फर्श धुलाई।
वस्त्र अंग तन स्वच्छ बनाते, ठंडे पेय चाय में आते।
कूकर में सब्जी तुम्ही पकाते, तुम बिन आटा गूंद न पाते।
दलिया दाल में तुम्हें मिलायें, काम नहाने के तुम आये।
बिन पानी ना बने मकान, जल चालित उद्योग महान।
अगर किसी ने घर बनवाया, चूना या सीमेंन्ट लगाया।
मिश्रित आप मसाले करते, भाप के इंजन तुमसे चलते।
तुम ही इंजेक्सन में वाटर, ड्रिप में तुमही रहते घुलकर।
तेज बुखार में ताप घटाते, तन पर गीला वस्त्र फिराते।
जोड़ अस्थि में पीड़ा पाते, भरकर बोतल सेक लगाते।

दोहा- दैनिक जीवन में मिला, तुम्हें प्रमुख स्थान।
पृथ्वी पर अनमोल तुम, कुदरत के वरदान।।6।।

जल का महत्व-वनस्पति के लिये

तुम पौधों के पोषण हारे। पत्ती फूल खिलावन हारे।
क्लोरोफिल भी आप बनाते, वाष्पोत्सर्जन से बाहर जाते।
तुमने भरा खेत खलिहान, तुम से खिल जाये उद्यान।
सूखी धरती पीर पुकारे, आते मेघा बनकर प्यारे।
सूखे गेहूँ धान झुलसती, तुम बिन फसलें नहीं उपजती।
जल में उगे लिमनेरिया घास, जिसमें तत्व मिलेगा खास।
आयोडीन यह तत्व कहलाता, औषधियाँ बहुमूल्य बनाता।
ताप धरा का जब बढ़ जाता, यह ग्लोबल वार्मिंग कहलाता।
धरती को तुम सिंचित करते, तुम ही फसल नियंत्रित करते।

दोहा- हरी भरी यह वसुन्धरा, जल से है उद्यान।
भोजन औषधि वस्त्र भी, हमको किये प्रदान।।7।।

जल का महत्व-जन्तु और मानवों के लिये

चौपाई- जल से निर्मित मानव काया, तुलसी ने मानस में गाया।
रूधिर प्लाज्मा त्वक् निर्माणा, जल बिन देह रहे निष्प्राणा।
प्लाज्मा तन में बनता तबही, सत्तर प्रतिशत जल हो जबही।
प्रोटोप्लाज्मा जीव पहचानो, बिन पानी ना बने ये मानो।
पाचक रस ऐन्जायम बनाना, फिर पाचन क्रिया करवाना।
आपसे बनता मूत्र पसीना, ताप नियंत्रण तन में कीना।
जलचर पाते आवास नबीना, जैसे जल बिन रहे न मीना।

दोहा- स्वास्थ्य शुद्ध जल से बढ़े, जल करता नीरोग।
नई ऊर्जा स्फूर्ति सब, जल से पाते लोग।।8।।
अगर प्रदूषित जल पिये , अनजाने जो लोग।
वे आमंत्रित कर रहें, सत्तर प्रतिशत रोग ।।9।।

जल का महत्व : धार्मिक आयोजन में

चौपाई- चार धाम जो यात्रा करते। गंगोत्री जाकर जल भरते।।
फिर रामेश्वर जाय चढ़ाते। तीरथ फल तबही वे पाते।।
कथा भाग्वद् संत सुनाते। कलश यात्रा जल मंगवाते।।
जब स्थापित कलश कराते। तबही प्रवचन कथा सुनाते।।
और भी जल की महिमा गाऊँ। काँवर यात्रा रीति सुनाऊँ।।
पैदल भक्त मील कई जावे। तब गंगा जल भरकर लावें।।
जल शिवमंदिर जाय चढ़ावें। काँवर यात्री ये कहलावें।।
जल का पूजन जल सम्मान। दस्टोन कहाये एक विधान।।
पुत्र जन्म पर मंगल गावैं। सखियाँ मिल दस्टोन मनावैं।।
नाचत गावत कुये पै जावैं। साथ प्रसूता को ले जावैं।।
कुआं पुजवाय घड़ा भर लावैं। बुन्देलखण्ड यह पर्व मनावें।

दोहा- गंगा दशहरा पर्व को, जानत हैं सब कोय।
गंगाजल की इस दिवस विधिवत पूजा होय।।10।।

चौपाई- जल इक औषधि बड़ा प्रभाव। देखना चाहें चलें उन्नाव।।
सरिता यहां पहूज कहाती। अद्भुद चमत्कार दिखलाती।।
जल में इसके लोग नहाते। त्वचा रोग उनके मिट जाते।।
रोगी कठिन कुष्ठ के आते। कोढ़ी यहां ठीक हो जाते।।
इस जल में रक्त शोधक तत्व। सल्फर से बढ़ गया महत्व।।
यह प्रभाव शासन लखपाया। निजव्यय कुष्ठाश्रम खुलवाया।।
भोजन भवन सभी सुविधायें। रहैं निःशुल्क कुष्ठजन आयें।।
बारह महिने भक्त नहाते। बालाजी दर्शन वे पाते।।
झांसी टीमकगढ़ दरम्यान। ''अछरू माँ'' जल कुंड महान।।
प्रश्न हृदय में लेकर जायें। कुण्ड के जल में उत्तर पायें।।
बैंठे जाकर जल के पास। मन में लेकर कोई आस।।
जल में वायु बुलबुले चलते। कोयला नारियल फूल निकलते।।
सुफल मनोरथ अर्थ लगायें। जैसी भेंट कुण्ड से पायें।।

दोहा- मथुरा जी के निकट इक, ग्राम तरौली जान।
त्वक विकार मिटते यहां, जल कुंडी के स्नान।।11।।

हानि कारक जल-

चौपाई- अंनियंत्रित वर्षा हो जाती। बादल फटे सृष्टि मर जाती।
गांव नगर जलमय हो जाते। सीधे-सीधे भू-गर्भ समाते।।
जल में प्रदूषण होय अनेका। करते हानि एक तै ऐका।
आर्सेनिक जब जल में आवैं। तन में कैंसर रोग बनावें।।
नहीं जानते हैं कई लोग, एल्यूमीनियम का करें प्रयोग।
खाते पीते खाद्य पकाते, बर्तन एल्मोनियम के लाते।
एल्मोनियम जल में घुल जाये, मस्तक तंत्र को क्षति पहुंचाये।

दोहा- अलग राज्य में अलग है, धातु विभिन्न प्रकार।
जल में दूषण धातु का, उसी मृदा अनुसार।।12।।

चौपाई- कैडमियम जल में घुल जाये, दस्त हृदय के रोग बढ़ाये।
जापानीज इटाई-इटाई, कठिन रोग होता है भाई।
कैडमियम से यह हो जाता, जो जल को विषयुक्त बनाता।
यकृत में कैडमियम बढ़ जाता, तन में पथरी रोग बढ़ाता।
फ्रिज वॉशिंग मशीन बतातें, कुकर कैडमियम प्लेट लगाते।
तंत्रिका तंत्र को विक्षृत बनावै, पारा जल में यदि घुल जावै।
पारा सिरदर्द थकान बढ़ाता, जल मीनों को मार गिराता।

दोहा- पानी पीने में अगर, कमी करे जो लोग
दुर्बल तन पथरी बनें, आजायें कई रोग।।13।।
जल में घुले अपद्रव्य जब, कई धातु के तत्व,
हानि करें विषयुक्त हो जल का घटे महत्व।।14।।

चौपाई- मानव के जीवन घन प्राण, इस धरती के रत्न महान।
तुम दुर्लभ पर अति अनिवार्य, तुम बिन होय न कोई कार्य।
आज कठिन है आपको पाना, मीलों दूर से पड़ता लाना।
बात जानकर है अनजान, लापरवाह हुआ इंसान।
करें बहुत जल की बरबादी, संयम संग्रह बात भुलादी।
जल की उपस्थिति स्वीकारें, बूँद-बूँद अनमोल विचारें।
जल स्त्रोतों की रक्षा करिये, वर्षा जल का संग्रह करिये।
सोचो आगे की तस्वीरें, रोते शिशु फूटी तकदीरें।

दोहा- यह महिमा जल देव की, आप लीजिये जान।
जल संचय अरु शुद्धजल, सदा राखियें ध्यान।।15।।
जागरूक हम सब बने, सबका हो कल्याण।
हरी-भरी धरती रहे, सुख पावै संतान।।16।।

संपर्क करें:
चन्द्रप्रकाश पटसारिया
ग्राम व पो. बेरबाला, महोल्ला इन्दरगढ़,
जिला दतिया मध्य प्रदेश-475 675
मो. 9893678267